भारतीय दर्शन और पाश्चात्य दर्शन में अंतर :-

आधार	भारतीय दर्शन	पाश्चात्य दर्शन
उद्देश्य	मोक्ष या आत्मसाक्षात्कार	ज्ञान या सत्य की खोज
प्रकृति	आध्यात्मिक एवं अन्तर्ज्ञानप्रधान	बौद्धिक एवं तर्कप्रधान
आधार	श्रद्धा एवं अनुभव	बुद्धि एवं तर्क
परिणाम	आध्यात्मिक मुक्ति	वैज्ञानिक या बौद्धिक विकास
दृष्टिकोण	एकात्मवादी (Holistic)	विश्लेषणवादी (Analytical)

दर्शन के प्रमुख कार्य (Functions of Philosophy)

1. व्याख्यात्मक कार्य (Explanatory) : जगत और जीवन की व्याख्या करता है।
2. मूल्य-निर्धारण कार्य (Normative) : नैतिक और सौन्दर्यात्मक मूल्यों को स्पष्ट करता है।
3. समालोचनात्मक कार्य (Critical) : अन्य ज्ञानों की समीक्षा करना है।
4. समन्वयात्मक कार्य (Synthetic) : विभिन्न अनुभवों व विज्ञानों का समन्वय करता है।

दर्शनशास्त्र की शाखाएँ (Branches of Philosophy)

1. तत्वमीमांसा (Metaphysics) : वास्तविकता का अध्ययन।
2. ज्ञानमीमांसा (Epistemology) : ज्ञान का अध्ययन।
3. नीतिशास्त्र (Ethics) : आचरण और मूल्य का अध्ययन।
4. सौन्दर्यशास्त्र (Aesthetics) : सौन्दर्य और कला का अध्ययन।
5. राजनीतिक दर्शन (Political Philosophy) : समाज और शासन का अध्ययन।
6. तर्कशास्त्र (Logic) : तर्क वितर्क का विज्ञान

दर्शनशास्त्र का महत्व (Importance of Philosophy)

दर्शनशास्त्र का महत्व यह है कि यह हमें जीवन और जगत को समझने की सही दृष्टि प्रदान करता है। यह सही और गलत, अच्छे और बुरे का भेद करना सिखाता है। दर्शन मनुष्य में तर्क-शक्ति, विवेक और आत्मज्ञान का विकास करता है, जिससे वह अपने जीवन को सार्थक बना सके। साथ ही यह हमें नैतिक, आध्यात्मिक और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

निष्कर्ष:

दर्शनशास्त्र वह विद्या है जो मनुष्य को स्वयं को और संसार को समझने की दृष्टि देता है। भारतीय परम्परा में यह केवल बौद्धिक नहीं बल्कि आत्मिक साधना है। पाश्चात्य परम्परा में यह तर्क और विवेक का शास्त्र है। दोनों का संयुक्त स्वरूप हमें बताता है कि "दर्शन का उद्देश्य सत्य की खोज और जीवन का मार्गदर्शन है।"